बाल कहानियाँ एवं नैतिक शिक्षा

पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप

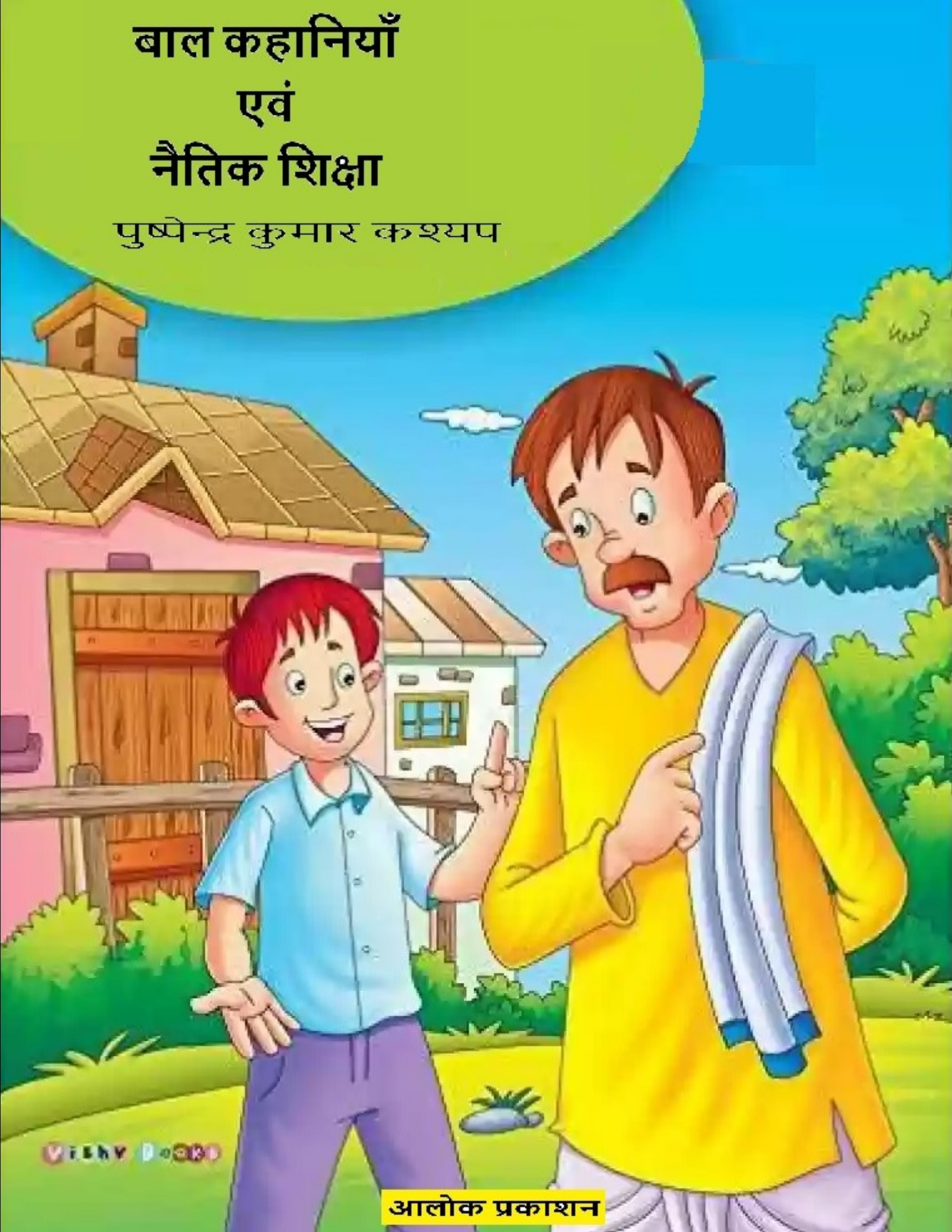

आलोक प्रकाशन

बाल कहानियाँ
एवं
नैतिक शिक्षा

पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप

C - पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप – 2023

आलोक प्रकाशन

अनुक्रमणिका

बचत 4
समुद्र 5
ब्लैक बोर्ड और डस्टर 6
(श्यामपट और धूल मार्जनी) 6
नाव और व्यापारी 7
जैसी करनी वैसी भरनी 8
सदाचार एक नैतिक गुण 9
अच्छी आदतें 10
मूर्ख सेवक 11
धोबी और गधा 12
परिश्रम से कमाया धन 13
मेहनत का रंग 14
परोपकार 15
मेहनत का फल 16
बलिदान 17
प्रेम 18
अच्छा विद्यार्थी - नैतिक शिक्षा 19

बचत

एक गाँव में सुखीराम नामक किसान अपनी पत्नी शांतिदेवी के साथ रहता था । वे कृषि कार्य करते थे, कृषि से उत्पन्न अनाज ही उनके जीविकोपार्जन का एकमात्र साधन था । एक साल बहुत कम वर्षा होने से अकाल पड़ गया और उसे खेती से लगभग दस माह गुजर-बसर करने योग्य अनाज प्राप्त हुआ, जिससे सुखीराम बहुत चिंतित रहने लगे । उसकी पत्नी अपने नाम के अनुरूप बहुत शांत, समझदार और दूर की सोच रखने वाली जागरूक गृहणी थी । अपने पति को इस तरह चिंतित देखकर एक दिन शांतिदेवी बोली- आजकल आप बहुत चिंतित दिखाई देते हैं, क्या बात है?

सुखीराम ने एक लंबी ठंडी सांस लेकर कहा - इस साल अनाज बहुत कम प्राप्त हुआ है जो पूरे वर्ष भर के लिए पर्याप्त नहीं है, यही सोचकर चिंतित हूँ । शांतिदेवी ने दिलासा देते हुए कहा भगवान बहुत दयालु है, कुछ न कुछ व्यवस्था हो जाएगा, आप चिंता करना त्याग दीजिये । समय धीरे-धीरे बीतता गया, सुखीराम अचंभित थे कि वर्ष पूरे होने के बाद भी घर मे कुछ अनाज शेष है । इसे देखकर किसान ने सुखद आश्चर्य के साथ अपनी पत्नी से पूछा- ऐसे कैसे संभव हुआ? पत्नी ने जवाब दिया- मैं भोजन बनाने के लिए पहले की तरह पूर्ववत मात्रा में चावल निकालने के बाद उसमें से दो मुट्ठी चावल कोठी में वापस रख देती थी । इस तरह दो-दो मुट्ठी अनाज प्रतिदिन बचत करने से पूरे वर्ष भर के लिए अनाज की पूर्ति हो गयी । आज सुखीराम को अपनी पत्नी पर बहुत गर्व का अनुभव हो रहा था ।

शिक्षा- हमें जीवन में बचत की आदत डालनी चाहिए।

समुद्र

बहुत पुरानी बात है, एक गाँव में दो भाई रहते थे । दोनों भाइयों में बहुत प्रेम था, वे सुखमय जीवन बिता रहे थे। एक बार बड़े भाई को आवश्यक कार्य से रात्रि के समय दूसरे गाँव जाना पड़ा ।रास्ते में उसकी मुलाकात एक साधू से हुई । साधू ने कहा- यदि तुमने मेरे प्रश्नों के सही उत्तर (जवाब) दिए ,तो मैं तुम्हें एक जनोपयोगी पुरस्कार दूँगा । बड़े भाई ने साधू महाराज के प्रश्नों के उत्तर बड़ी सहजता एवं विनम्रता से दी। साधू ने प्रसन्न होकर उसे एक जादुई बर्तन (पात्र) दिया, जो अपने मालिक की सारी इच्छाएं पूरी करता था । बर्तन से अपनी इच्छित वस्तुएं प्राप्त करने तथा वस्तु प्राप्ति के बाद उसे रोकने के लिए साधू ने कुछ मंत्र बताए, साथ ही इस मंत्र का आवाहन किसी भी अन्य व्यक्ति के सम्मुख करने से मना किया ।

जादुई बर्तन पाने के बाद बड़ा भाई बहुत सुख से रहने लगा, तथा यदा-कदा अपने छोटे भाई को भी भोज में आमंत्रित किया करता । छोटा भाई अपने बड़े भाई के रहन-सहन व ठाट-बाट को देखकर उससे ईर्ष्या करने लगा तथा इसका भेद जानने के लिए रातों में जागकर भाई की निगरानी करने लगा। एक रात उसने बड़े भाई को मंत्र बोलकर बर्तन से कुछ सामान माँगते देखा ,बर्तन ने तत्काल उन सभी वस्तुओं को उपलब्ध करा दिया। छोटे भाई की आँखें फटी की फटी रह गई, उन्होंने उस मंत्र को याद कर लिया परंतु बर्तन से सामान निकालना बंद करने के मंत्र को जाने बिना वह घर की ओर चल दिया । एक दिन मौका पाते ही छोटा भाई उस बर्तन की चोरी कर एक नाव में सवार होकर समुद्र के रास्ते अन्य देश के लिए भाग निकला ।

छोटा भाई ने मंत्र बोलकर जादुई बर्तन से जो भी माँगा, उसने सब दिया, भूख लगने पर उन्होंने भोजन की मांग की । जादुई बर्तन ने लज़ीज व्यंजनों की थाली उसके सामने रख दी, बर्तन से सामान निकलना निरंतर जारी रहा । जब उसने खाना शुरू किया तो उसे भोजन में नमक फीका लगा । उसने बर्तन से नमक की मांग की, बर्तन से नमक निकलना शुरू हुआ और निकलता ही रहा । चूँकि छोटा भाई को बंद करने का मंत्र मालूम नहीं था इसलिए बर्तन से नमक निकलता ही रहा ।

नाव में नमक भर गया और नमक के भार से नाव समुद्र में डूब गया, साथ ही छोटा भाई भी समुद्र में डूबकर मर गया । लोग कहते हैं कि उस बर्तन से आज भी नमक निकल रहा है, जिसके कारण समुद्र का पानी खारा (नमकीन) है ।

शिक्षा- हमें दूसरों की संपत्ति पर लालच नहीं करनी चाहिए

ब्लैक बोर्ड और डस्टर

(श्यामपट और धूल मार्जनी)

कुछ दिनों पूर्व ही मेरा तबादला इस गाँव की शाला में शिक्षण कार्य संपादन हेतु हुआ था । इस शाला में पठन-पाठन की आधुनिक सुविधाएँ जैसे- बिजली, पंखे, आभासी श्यामपट (डिजिटल ब्लैक बोर्ड) आदि सभी उपलब्ध थे। शाला के एक छोटे से कमरे के बाहर ताला लटक रहा था । चपरासी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि उस भंडार कक्ष (स्टोर रूम) में अनुपयोगी पुरानी ब्लैक बोर्ड, डस्टर, फर्नीचर, चॉक आदी अन्य वस्तुएं रखी हुई हैं ।

एक दिन मैं उस बंद कमरे के पास से गुजर रहा था तो भीतर से किसी के आपस में धीरे-धीरे बातें करने की आवाज सुनाई दी । मैंने भीतर की बातें सुनने के लिये दरवाज़े पर अपने कान टिका दिया ।

उस धूलयुक्त कमरे में पड़े डस्टर और ब्लैक बोर्ड अपने बीते दिनों को याद करते हुए आपस में बातें कर रहे थे। डस्टर ने ब्लैंक बोर्ड कहा- मित्र, मुझे लगता है कि अब हम दोनों की जिंदगी इस धूल भरे कमरे में ही समाप्त हो जायेगी । ब्लैक बोर्ड ने भी एक गहरी साँस ली और जवाब दिया- हाँ भाई, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है, जैसे हम दोनों इस अंधेरे धूलयुक्त कमरे में ही पड़े-पड़े समाप्त हो जायेंगे ।पहले जब डिजिटल बोर्ड नहीं था तब हम दोनों कितने काम करते और खुश रहते थे। ब्लैक बोर्ड ने रुआंसा होकर कहा- शिक्षक और बच्चे मेरे ऊपर लिख कर आनंदित होते और मेरा शरीर भर जाने पर सहलाते हुए तुम मुझे साफ करते। वो भी क्या दिन थे, जाने हमें फिर सूरज की रोशनी देखने को मिलेगा या नहीं?

हमारी शाला के ऊपरी मंजिल के एक कक्ष में एक शिक्षक डिजिटल ब्लैक बोर्ड का उपयोग करते हुए विज्ञान विषय पढ़ाने में व्यस्त थे, अचानक बिजली चली गई और लंबी अवधि तक बिजली नहीं आई। तभी उस शिक्षक को याद आया कि नीचे मंजिल के स्टोर रूम में ब्लैक बोर्ड, डस्टर, चॉक रखे हुए हैं। शिक्षक उस धूलयुक्त अंधेरे कमरे में आया और ब्लैक बोर्ड, डस्टर एवं चॉक को उठाकर अपने क्लास रूम में ले गये। बाहर आते ही ब्लैक बोर्ड और डस्टर ने खुली हवा में लंबी गहरी सांसें ली।

शिक्षक ब्लैंक बोर्ड में लिखकर पढ़ाना प्रारंभ किया, ब्लैक बोर्ड के भर जाने पर डस्टर उसे साफ करता। आज दोनों बहुत थे, दोनों एक दूसरे को देखते हुए बोल उठे "नया नौ दिन, पुराना सौ दिन (Old is Gold) अथवा पुराना हमेशा विश्वसनीय होता है।"

शिक्षा - पुरानी वस्तुओं को कभी बेकार नहीं समझना चाहिए।

नाव और व्यापारी

एक समय की बात है, एक व्यापारी व्यापार करने के उद्देश्य से शहर से गाँव गया । गाँव के बाहर एक बड़ी सी नदी बह रही थी, जिसे नाव के सहारे कम समय में पार कर गाँव पहुँच सकते थे । सड़क के रास्ते गाड़ी की मदद से जाने पर भी गाँव पहुँचने में कई घंटे लगते थे। व्यापारी ने समय बचाने के लिए नाव का सहारा लिया । कुछ दूर चलने के बाद व्यापारी ने नाव वाले से कहा- मैं आपके गाँव में पानी का फैक्टरी (कारखाना) लगाने आया हूँ । नाविक ने पूछा- यह क्या होता है साहब, हमें तो पता ही नहीं? व्यापारी ने पूछा- क्या कभी शहर नहीं गए हो? नाविक ने बड़े भोलेपन से कहा- मैं कभी शहर नहीं गया हूँ साहब । इस पर व्यापारी ने उसका खूब मजाक उड़ाया, नाविक चुपचाप सुनता रहा और नदी पार ले जाने के लिए लगातार नाव खेता रहा ।

सहसा आसमान में बादलों की घटा छा गई , घोर गर्जन के साथ पानी बरसने लगा, नदी में ऊँची लहरें उठने लगी । कुछ समय पश्चात नदी में तेजी से जल स्तर बढ़ने से नाव अनियंत्रित होकर एक बड़े चट्टान से जोरों से टकरा गया, जिससे नाव में छेद हो गया और पानी भर जाने से नाव डूबने लगा । नाविक ने व्यापारी से पूछा- साहब आपको तैरना तो आता है न ? व्यापारी ने बताया कि उसे तैरना नहीं आता । नाविक नाव से कूद गया और धैर्यपूर्वक चुपचाप व्यापारी को अपनी पीठ पर लादकर तैरते हुए नदी पार कर किनारे पहुँचाया । अब नाविक और व्यापारी दोनों सुरक्षित थे, व्यापारी की आँखों में नाविक के प्रति कृतज्ञता के साथ अपनी कही हुई बातों के लिए शर्मिंदगी के भाव थे ।

शिक्षा- हमें किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए और उसका मजाक नहीं उड़ाने चाहिए ।

जैसी करनी वैसी भरनी

एक गांव में एक वृद्ध किसान रहता था।उनके चार पुत्र थे किसान ने अपने पुत्र को पढ़ाया लिखाया और अपने पैरों में खड़ा किये। सभी पुत्र अपने अपने काम धंधे में ध्यान दे रहे थे। किसान अपने पुत्रों के काम करने की लगन को देखकर सही उम्र पर उनका विवाह कर दिया।

कुछ वर्षों बाद किसान का पोता पोती पैदा हुए उनको भी पूर्ण निष्ठा लगन के साथ शिक्षा दीक्षा दिए और बड़े होकर अच्छे पद पर आसीन हुए। जैसे-जैसे समय बीतता गया किसान के पुत्रों ने अपने आपसी विवाद में आकर अपने पिता को घर से बाहर निकाल दिए।

वृद्ध किसान गांव के बाहर खेत में एक झोपड़ी बनाकर जीवन यापन कर रहे थे उनका मन वहा नही लगता था अपने पोता -पोती को देखने के बहाने घर के आस पास आ जाते थे और उन्हे देख खुश होते । कुछ वर्षों बाद पोता पोती का विवाह हुआ विवाह के बाद पोता भी अपने पिता को घर से बाहर निकाल दिए। वृद्ध किसान के पुत्र अपने करनी को समझ गए और अपने वृद्ध किसान पिता के पास क्षमा मांगने गए ,पर किसान भूख प्यास के कारण अपने प्राण त्याग दिए थे। वृद्ध किसान के पुत्रों को अपने करनी पर बहुत पछतावा हुआ।

शिक्षा - हम जो बीज बोते हैं वही फल हमें प्राप्त होता है।

सदाचार एक नैतिक गुण

सदाचार का अर्थ है सज्जन का आचरण या शुभ आचरण। सत्य, अहिंसा, मैत्री भाव आदि बातें सदाचार में गिना जाता है। सदाचार को धारण करने वाले सदाचारी कहलाते हैं। सत्य भाषण उदारता, विनम्रता और सहानुभूति का गुण जिस व्यक्ति में होता है सदाचारी कहलाते हैं । सदाचारी व्यक्ति का समाज में कुछ विशिष्ट स्थान होता है वह हमेशा पूजनीय होता है। एक कहावत के अनुसार धन हानि होने से मनुष्य का विशेष हानि नहीं होता परंतु चरित्र के नष्ट होने से मनुष्य का सर्वस्व नष्ट हो जाता है। समाज में व्यक्ति सदाचारी नहीं होते तो उसका पतन निश्चित होता है इसलिए सदाचार को सर्वोत्तम पूंजी माना गया है।

सदाचार मनुष्य को सभ्य बनाता है मनुष्य के मन से काम, क्रोध ,मोह लोभ आदि बुराइयां नष्ट हो जाता हैं। सदाचार से बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करने से वह सरल हो जाता है। हमें महापुरुष जैसे राम,कृष्ण, गांधी के आचरण को आदर्श मानकर न्याय प्रिय आचरण करना चाहिए। सभ्य आचरण से एक सशक्त राष्ट्र निर्माण होता है।

सदाचार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं ।हमें सर्वथा लोगों के साथ-साथ पशु ,पक्षी ,जीव ,जंतु के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए हमे ऊंचे स्वर में किसी से बात नहीं करना चाहिए ।कई बार लोग हमें नाम से ज्यादा व्यवहार से जानते हैं इसलिए हमें सर्वथा सदाचारी होना चाहिए।

अच्छी आदतें

जो अच्छी आदतों का पालन करता है उसी को सभ्य कहा जाता है ।उसकी सब प्रशंसा करते हैं। जब हम बच्चे थे तब बड़े बुजुर्ग हमें छोटी छोटी बातें सिखाते थे जिससे हम इन बातों को अपनी आदत बना पाए। यह बातें हमें शायद उस समय समझ में ना आया हो पर वह हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण रोल निभाती है। हम अच्छी आदत को बड़े बुजुर्ग से सीखते हैं और आने वाले पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। इन अच्छी आदतों के वजह से हम जीवन में सफल हो पाते हैं।

अच्छी आदतें जो हमें सफल बनाती हैं

1. अपनों से बड़ों का आदर करो । जब वे उठकर तुम्हारे पास से जाए तो उठ कर अभिवादन करो।
2. बड़ों के सामने पैर पसार कर नहीं बैठना चाहिए बड़ों के सामने सिर झुका कर बात करो ।उनकी बातों का उत्तर दो ।जोर से बोलना हंसना अच्छी बात नहीं।
3. किसी की बुराई करना, किसी को धोखा देना , झूठ बोलना अच्छी आदत नहीं।
4. मुंह में उंगली डालना अच्छी आदत नहीं ।दातों से नाखून मत काटो। मुह, नाक और कान में कागज डालना अच्छी आदत नहीं।
5. हमें सुबह जल्दी उठना चाहिए ।
6. हमें रात को जल्दी सो जाना चाहिए।
7. हमें रोज व्यायाम करना चाहिए।
8. हमारा खाना खाने और सोने का समय नियमित होना चाहिए।
9. हमें समय का पाबंद होना चाहिए ।
10. हमें पोषण से भरपुर खाना खाना चाहिए।

मूर्ख सेवक

एक जमीदार के महल में रामू सेवक के रूप में रहता था। वह जमीदार का बहुत विश्वासपात्र था बिना रोक-टोक के कहीं भी महल में घूम सकता था। एक दिन जब जमीदार सो रहा था और रामू पड़खा झल रहा था तो रामू ने देखा, एक मक्खी बार-बार जमीदार के पेट में बैठ जाता था। पंखे से बार-बार हटाने पर भी वह मानती नहीं थी , उड़कर फिर वही बैठ जाती थी।

रामू को क्रोध आ गया। उसने पंखा छोड़कर हाथ में तलवार ले ली और इस बार जब मधुमक्खी जमीदार के पेट पर बैठी तो उसने पूरे बल से मक्खी पर तलवार ले ली और मक्खी जमीदार के पेट पर बैठी तो उसने पूरे बल से मक्खी पर तलवार का हाथ छोड़ दिया।

मक्खी तो उड़ गई किंतु जमीदार की पेट तलवार की वार से टुकड़ों में बट गई। जमीदार मर गया।

शिक्षा :"मूर्ख मित्र से आपेक्षा विद्वान शत्रु ज्यादा अच्छा होता है। "

धोबी और गधा

धोबी के पास एक घोड़ा और एक गधा था। एक दिन धोबी ने कपड़ो की पोटली गधा के पीठ पर लात दी। घोड़े के ऊपर कुछ नहीं लादा। गधे के ऊपर लादा बोझा काफी भारी था। उसने घोड़े को अनुरोध किया "भाई! मैं इस बोझ के मारे मरा जा रहा हूं कुछ बोझ अपने ऊपर ले लो। "

घोड़े ने साफ इनकार किया "मैं तुम्हारा बोझ क्यों लादु? घोड़ा सवारी के लिए होता है बोझा के लिए नहीं । " गधा चलता रहा। कुछ देर बाद गधा बोझा नहीं सह पाया और गिर पड़ा।

अब धोबी को अपनी गलती समझ में आई। उसने गधे को पानी पिलाया और सारा बोझा घोड़े पर ला दिया। आप घोड़ा पछताने लगा वह सोचने लगा, " अगर मैंने गधे की बात मानकर उसका आधा बोझा अपनी पीठ पर ले लिया होता तो मुझे पूरा बोझा लाद कर बाजार तक इस तरह नहीं जाना पड़ता। "

परिश्रम से कमाया धन

सोनाखान क्षेत्र में एक जमींदर था।वह अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे।प्रजा के दुख: में दुखी,प्रजा के सुख में सुखी होते थे। उसकी जमीनदारी क्षेत्र में एक ब्राह्मण गरीब था।जो भिक्षा मांग कर जीवन यापन करते थे। भिक्षा में जो मिले उसी में खुश और संतुष्ट थे।

ब्राह्मण की पत्नी,सभी ब्रह्मणों को जमींदार से धन दौलत मांग कर अमीर बनते देख।अपने पति को भी जमींदार पास जाने के लिए बोलती पर ब्राह्मण नहीं मानते थे।

एक दिन ब्राह्मण अपनी पत्नी की बात में आकर जमींदार के पास चले गए। जमींदार, ब्राह्मण का आदर सत्कार कर बोले,ब्राह्मण देव कैसे आगमन हुआ? ब्राह्मण,जमींदार से अपने परिश्रम से कमाया हुआ एक आना मांगा जमींदार सोच में पड़ गए कि मैंने आज तक एक पैसा भी परिश्रम से नहीं कमाया। जमींदार, ब्राह्मण को कल आने के लिए बोल कर चले गए।

ब्राह्मण के जाने के बाद जमींदार वेश बदलकर काम की खोज करते हुए लोहार के पास पहुँचा और उसके पास परिश्रम से एक आना कि कमाई करने के बाद अपने महल आया।अगले दिन जमीदार ने ब्राह्मण को एक आना दे दिया। ब्राह्मण देव उस पैसे को अपने पत्नी को दे दिए इस पर पत्नी नाराज होकर उसे तुलसी चौरा में फेंक दी। कुछ दिनों बाद ब्राह्मण की पत्नी प्रतिदिन तुलसी चौरा में पानी अर्पित करने लगी। उसमें पौधा उगता दिखाई दिया जो देखने में बहुत सुंदर था। देखते-देखते वह पौधा पेड़ में परिवर्तित हो गया और उसमे फल लगना प्रारंभ हो गया। उस फल और फूल की खुशबू चारों और आंगन में फैल रहा था । एक बार अचानक उस जमींदार क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा जमीदार प्रजा के दुख को देखकर अन्न ग्रहण नहीं कर रहे थे जिसका ज्ञान ब्राह्मण को हुआ तो जमीदार को मिलने के लिए घर से कुछ फल और फूल ले गए । जमीदार फल को ग्रहण करने के पूर्व अपने हंस को दिए हंस ने उसे खाया जमीदार इसे देखकर आश्चर्यचकित हुए और इस फल के बारे में जमीदार ने ब्राम्हण से पूछा ब्राह्मण के बताए जाने पर जमींदार ने ब्राम्हण को बताया कि यह मोती का फल है और उसे देखने उसके घर चले गए जमींदार फल के बदले उसे बहुत धन दौलत दिये , उस पेड़ को अपने महल के आंगन में लगाएं।

शिक्षा -परिश्रम का फल मीठा होता है।

मेहनत का रंग

छत्तीसगढ़ के जांजगीर जिला कोरबी गांव में एक किसान रामचरण रहता था। उसका एक पुत्र जिसका नाम कमल था। किसान के पास जीवकोपार्जन का कोई साधन नहीं था । वह दूसरों के खेत को अधिया में लेकर खेती करता और अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। कमल पढ़ाई में तेज था। रामचरण आर्थिक तंगी में ही कमल को पढ़ाया। कमल बड़े होकर अपने पिता के खेत में मदद करता।माता-पिता का कहना मानता और उनके बताए रास्ते पर चलता था।

देर सबेरे परिश्रम करके कमल कुछ पैसा इकट्ठा कर खेती के लिए जमीन खरीदा। अपने पिता कि तरह फसल उगाये और अनाज को बेचकर थोड़ा बहुत पैसा कमाने लगे।धीरे-धीरे कमल की मेहनत रंग लाई और कुछ वर्षों में उनकी गरीबी दूर हो गई।

परोपकार

एक मछुआरा अपने पुत्र के साथ समुद्र किनारे रहते थे।एक दिन मछुआरा समुद्र में मछली पकड़ने के लिए चले गए और कभी वापस नहीं लौटे। मछुआरा के पुत्र अपने पिताजी के लिए बहुत दुखी था एक दिन वह समुद्र किनारे बैठे हुए थे कुछ समय पश्चात उन्होंने देखा कि नाव समुद्र के भंवर में फंस रहा है वह नाव डूबने ही वाला था,इसे देखकर मछुआरा के पुत्र एक पल भी विलंब ना करते हुए नाव को लेकर उन लोगों को बचाने के लिए चले गए और सभी को सकुशल किनारे तक ले आए जिसमें उसके पिताजी भी था पुत्र की परोपकार की भावना अपने पिताजी से फिर से मिला दिया।

शिक्षा :-हमें निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा व सहायता करनी चाहिए।

मेहनत का फल

जांजगीर नगर के पास स्थित एक गाँव में मंगल नामक गरीब किसान रहता था। उसके पास जीविकोपार्जन के लिए लगभग एक एकड़ कृषि भूमि थी, जिसमें वह खेती किया करता था। खेती से हुई आमदनी एवं शासन द्वारा कभी-कभी चलाए जाने वाले राहत कार्यों में काम करने से प्राप्त हुई मजदूरी के सहारे उसके परिवार का कठिनाई से जीवन-यापन हो रहा था । किसान के परिवार में उसकी आज्ञाकारी सुशील पत्नी और एक बहुत सुंदर पुत्र था। पुत्र का नाम उन्होंने बड़े प्यार से राहुल रखा था। राहुल दोनों पैरों से बचपन से ही दिव्यांग था इसलिए किसान राहुल के भविष्य के लिए बहुत चिन्तित रहता था। पढ़ाई योग्य होने पर राहुल को गाँव की पाठशाला में पढ़ने भेजा।

दिव्यांग होने की वजह से राहुल आम बच्चों के समान उछल-कूद, भाग-दौड़ नहीं कर सकता था, इसलिए किसी ने भी उसे अपना मित्र नहीं बनाया। प्रायः सभी बच्चे उसके पैरों को कटाक्ष कर हमेशा उसका मजाक उड़ाया करते थे। लाचार राहुल अपना मन मसोसकर रह जाता था, परंतु उसने दृढ़तापूर्वक अपने मन में यह ठान लिया कि उसे अच्छी पढ़ाई कर अपने जीवन में कुछ ऐसा करना है,जिससे उसके माता-पिता और स्वयं उसका नाम रोशन हो सके। राहुल खूब मन लगाकर पढ़ाई करता था ,इसलिए सभी शिक्षक उसे बहुत चाहते थे और उसकी भरपूर मदद किया करते थे। मेधावी छात्र होने के कारण उसे पर्याप्त छात्रवृत्ति मिल जाने से पढ़ाई में किसी प्रकार का व्यवधान नही आया। वह ध्यानपूर्वक पढ़ाई-लिखाई करते हुए अपना सारा वक्त गुजारता था, जिसके फलस्वरूप राहुल ने शालेय शिक्षा प्राविण्य अंकों के साथ उतीर्ण कर अपनी शाला और गाँव का नाम रोशन किया ।

शहर के महाविद्यालय में प्रविष्टि लेकर उसने आगे पढ़ना जारी रखा। जब वह स्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र था, उसी अवधि में शिक्षक पद में भर्ती हेतु निकले विज्ञापन को देखकर राहुल ने भी आवेदन प्रस्तुत किया और उसका चयन शासकीय शिक्षक के पद पर हो गया। उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ शिक्षकीय कार्य में नित नवीन प्रयोग करते हुए अपनी शाला के बच्चों को शिक्षा दिया। उसके द्वारा पढ़ाये गए आज सैकड़ों बच्चे शासकीय सेवा से विभिन्न पदों पर आसीन हैं।

एक बार संपूर्ण विश्व में महामारी फैल गई, उस महामारी के दौरान उसने अपने शाला के बच्चों के साथ-साथ पूरे गाँव के बच्चों को पूरी निष्ठापूर्वक शिक्षा उपलब्ध कराया। उन्होंने अपने शाला भवन का कायाकल्प किया। इस कार्य हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के महामहिम राज्यपाल ने राज्य द्वारा प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च शैक्षिक सम्मान एवं पुरस्कार से राहुल को सम्मानित किया। इस तरह राहुल ने अपने गाँव के साथ-साथ अपने माता-पिता का नाम रोशन किया ।

शिक्षा- पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत से कार्य करने पर असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। इसीलिए कहा गया है कि- "मेहनत का फल मीठा होता है।"

बलिदान

कमरीद गांव में सुनील नाम का एक सुंदर सुशील लड़का था। उसके मां-बाप अनपढ़ होकर भी अपने बच्चों को बहुत पढ़ाया। जब सुनील बीएससी द्वितीय वर्ष में था। तब उसकी नौकरी लग गई और उसके घर को एक सहारा मिल गया।सुनील के पिताजी क की एक आंख नहीं थी। जिसके कारण उन्हें देखने में बहुत परेशानी होता थी। गांव के सभी बच्चे बूढ़े एक आंख ना होने के कारण उसे अपमानित करते थे। जिसके कारण सुनील को अपने पिता से बहुत नफरत करता था। सुनील की नफरत दिन-प्रतिदिन बढ़ते गया और कुछ वर्षों बाद सुनील अपने पिताजी को छोड़कर उससे दूर दूसरे गांव में रहने लगा। और शादी कर लिया। वह अपने पिताजी को कभी नही मिला ना ही उसके बारे मे हालचाल जानने की कोशिश किया।
इस बात को सोच-सोच कर उसके पिताजी बीमार पड़ गए।वर्षों बाद सुनील को एक पत्र मिला जो उनकी मृत्यु के बाद प्राप्त हुआ।

सुनील अपने पिताजी का पत्र मिला उसे पढ़ना शुरू किया उसमें लिखा था।बेटा सुनील मुझे तुमसे या मेरी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं मेरी एक आंख ना होने से तुम मुझे जिंदगी भर नफरत करते रहे। मगर मैंने एक आंख ना होने का कारण कभी नहीं बताया। जब तुम छोटे थे तो खेलते वक्त एक लकड़ी का टुकड़ा आंख में घुस गया और तुम्हारा आंख खराब हो गया। डॉक्टर ने बताया कि बचपन में आंख कहीं से मिल जाए तो ठीक हो सकता है। मैंने एक पल भी देर ना करते हुए ।तुम्हे अपना आंख दिया और तुम ठीक हो गए। मैं यह बात तुमको कभी बताना नहीं चाहता था ।लेकिन जिंदगी भर मुझे नफरत ना करो इसके लिए मुझे बात बताना पड़ा। सुनील यह सब जानकर अपने आप से नफरत हो गई।उसे वह सारी घटना याद आ गई जिससे वह अपने पिताजी को नफरत से बोला करता था।सुनील को समय बीत जाने पर पिता के किए बलिदान का महत्व समझ में आया।

प्रेम

बहुत पुरानी बात है, सकरेली नामक गाँव में नेकदिल, धार्मिक विचारों वाली एक बुजुर्ग महिला (वृद्धा) अपने पति और विवाह योग्य बेटी के साथ, छोटी सी कुटिया में बहुत कष्टमय जीवन व्यतीत करते हुए रह रही थीं । एक बार रात्रि के प्रथम प्रहर में तीन अपरिचित अतिथियों ने उस महिला की कुटिया के समीप पहुँचकर रात बिताने के लिए आश्रय (सहारा) मांगने आवाज लगाई। आवाज सुनकर महिला बाहर आईं, तीनों अपरिचित पुरुषों को देखकर महिला बड़ी विनम्रता से बोली- महानुभाव, यद्यपि मैं आप लोगों को नहीं जानती, परंतु आप लोगों को देखकर मुझे प्रतीत हो रहा है कि "आप लोग बहुत दूर से चलकर आए हैं, बहुत थके हुए एवं भूखे- प्यासे भी लग रहे हैं।" कृपया अतिथिगण, हमारी कुटिया में प्रवेश कर अतिथि सत्कार करने का अवसर प्रदान कर हमें कृतार्थ करें तथा भोजन- जलपान ग्रहण कर रात्रि विश्राम कीजिए ।

महिला की बातें सुनकर उनमें से एक पुरुष ने परिचय देते हुए कहा कि- हममें से एक का नाम प्रेम, दूसरे का नाम सफलता और तीसरे का नाम संपत्ति है तथा हममें से कोई एक ही आपके घर के भीतर प्रवेश कर सकता है, हम तीनों एक साथ किसी के भी घर में प्रवेश नहीं कर सकते। अब आप विचार कर लीजिये और किसी एक को अंदर बुला लीजिये।

महिला कुछ देर सोचने के बाद बोली- आप में जिसका नाम प्रेम है, वह मेरी कुटिया के भीतर आ जाए। प्रेम के घर में प्रवेश करते ही सफलता और संपत्ति दोनों ही प्रेम के पीछे-पीछे घर में प्रवेश कर गये। महिला आश्चर्यचकित होकर विस्फारित नजरों से उन्हें देखती रह गयी, तब प्रेम ने मुस्कुराते हुए महिला को समझाया कि जहाँ प्रेम है वहां सफलता और संपत्ति दोनों ही स्वतः खींचे चले आते हैं, लेकिन जो व्यक्ति सफलता या संपत्ति को अधिक महत्व देते हैं, प्रेम वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता।

शिक्षा- हमें सदैव सभी के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करने चाहिए, तभी हमें सफलता और संपत्ति की प्राप्ति होगी।

अच्छा विद्यार्थी - नैतिक शिक्षा

विद्यार्थी दो शब्दों से मिलकर बना है "विद्या"+ "अर्थी" जिसका अर्थ होता है विद्या चाहने वाला। विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है वयस्क, युवा, बालक, किशोर।

एक अच्छे विद्यार्थी हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। विद्यार्थी में जिज्ञासु गुण होता है वह किसी भी वस्तु को जानने की इच्छा रखता है। विद्यार्थी में 5 गुण पाए जाते हैं कौवे की तरह चेस्टा , बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह नींद, अल्पाहारी , गृहत्यागी।

विद्यार्थी जीवन भर सीखते रहता है अच्छा विद्यार्थी सभी कार्य समय पर करता है सुबह समय पर उठना, शौच करना ,सफाई एवं स्नान आदि करके पढता है। वह अपने बड़ों का आदर और छोटों से स्नेह करता है। समय पर विद्यालय जाता है और सभी शिक्षकों का आदर सम्मान करता है । विद्यार्थी पढ़ाई के अलावा सभी कार्य करता है अच्छा विद्यार्थी किसी से लड़ाई नहीं करता और झूठ नहीं बोलता है।

पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप
प्राथमिक शाला सकरेली ब
सक्ति